मैकियावेली के शक्ति राजनीति की प्रासंगिकता।

रोहित सिंह

शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग,दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,गोरखपुर (उ० प्र)

शोध संक्षेप -

मैकियावेली के द्वारा पश्चिमी चिंतन में पहली बार राजनीति को **शक्ति राजनीति** के रूप में चित्रित किया गया और उसने प्रिंस में लिखते हुए कहा कि शक्ति का अर्जन और शक्ति को बनाये रखना राजकुमार का मूल उद्देश्य है और उसके अनुसार राज्य को शक्तिशाली बनाये रखने के लिए राजा नैतिक व्यवहार भी अपना सकता है, परन्तु नैतिक होना राजा का उद्देश्य नहीं है बल्कि नैतिकता राजा के लिए साधन है और उसके अनुसार राज्य को शक्तिशाली बनाये रखने के लिए राजा को धूर्तता, चालाकी, धोखेबाजी सभी उपायों का प्रयोग करना चाहिए। इसलिए पश्चिमी चिन्तन में मैकियावेली पहला विचारक है जिसने राजनीति और नैतिकता के बीच विभाजन कर दिया, जिसका अभिप्राय है कि राजकुमार के कार्यों का नैतिक मूल्यांकन करना उचित नहीं है।

मैकियावेली का चिंतन न तो नैतिक है और न ही अनैतिक, बल्कि यह नैतिकता से तटस्थ है अथवा अलग है जिसका अभिप्राय है कि राजकुमार को कार्य करते समय नैतिक मानदंडो के पालन की आवश्यकता नहीं है बल्कि उसे राज्य को शक्तिशाली बनाये रखने का प्रयत्न करना चाहिए और राज्य को शक्तिशाली बनाये रखने के लिए उसके द्वारा संपादित सभी कार्य नैतिक हैं। मैकियावेली ने **शासनकला** का विचार प्रतिपादित करते हुए शासन कला को केंद्रीय महत्व प्रदान किया गया। मैकियावेली ने यह माना कि राज्य की सुरक्षा साध्य है जिसके लिए किसी भी साधन का प्रयोग किया जा सकता है। जिसका यह भी अभिप्राय होता है कि राजा के कार्यों पर नैतिकता का बंधन लागू नहीं होगा। इस प्रकार यह शोध पत्र मैकियावेली के शक्ति राजनीति के विचार की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

- **मुख्य शब्द -** शक्ति राजनीति, शासन कला, पंथनिरपेक्षता, यथार्थवाद, कूटनीतिज्ञ।

प्रस्तावना -

- मैकियावेली इटली के फ्लोरेन्स प्रान्त का निवासी था जो इटली में पुनर्जागरण का केन्द्र था और पुनर्जागरण आंदोलन के द्वारा पारलौकिक और धार्मिक मान्यताओं के बजाय इहलौकिक और भौतिक विश्व के महत्व पर बल दिया गया और मैकियावेली के द्वारा मानवीय स्वभाव का चित्रण पुनर्जागरण की मान्यताओं से प्रभावित प्रतीत होता है। मैकियावेली ने मानव स्वभाव का वर्णन करते हुए कहा कि व्यक्ति स्वभाव से लालची और स्वार्थी है। **"व्यक्ति पिता की मृत्यु भूल सकता है, सम्पत्ति का विनाश नहीं।"** इसलिए व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा सम्पत्ति अर्जित

करना चाहता है और इस सम्पत्ति को सुरक्षित रखने के लिए वह शक्ति भी अर्जित करना चाहता है। मैकियावेली ने कहा, **"इटलीवासी बड़े बुद्धिमान हैं परन्तु वे स्वार्थी लालची एवं भ्रष्ट हैं क्योंकि वे अपने हितों को सदैव राष्ट्र के हितों से प्राथमिक बना देते हैं। और मानव का यह भ्रष्ट स्वभाव केवल इटलवासियों का नहीं है, बल्कि सभी व्यक्ति स्वार्थी, लालची एवं भ्रष्ट हैं, जो इटली की एकता में सबसे बड़ी बाधा है।"**

- यद्यपि यह उल्लेखनीय है कि मैकियावेली ने व्यक्ति के लिए नैतिकता को आवश्यक माना है। इसलिए उसके अनुसार नैतिकता के मानक व्यक्ति पर लागू होते हैं, जिसका अभिप्राय है कि व्यक्ति को धोखेबाजी और किसी की हत्या का अधिकार नहीं है, जबकि राजकुमार ऐसा कर सकता है क्योंकि राजुकमार पर राज्य की सुरक्षा का दायित्व है और यदि वह नैतिक आचरण करने लगेगा तो राज्य की सुरक्षा ख़तरे में पड़ सकती है। मैकियावेली का मानना था कि शासक को भाग्यवादी और नियतिवादी नहीं होना चाहिए बल्कि शक्ति के द्वारा प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने पक्ष में परिवर्तित करने की क्षमता होनी चाहिए। मैकियावेली ने माना कि आम व्यक्ति कायर और डरपोक होता है इसलिए शासक शक्ति के द्वारा उन पर नियंत्रण स्थापित कर सकता है। मैकियावेली का मानना है कि शासक को यह सीखना होगा कि जैसा वह हो वैसा वह दिखे नहीं।
- मैकियावेली ने यूनानी युग के नैतिकतावादी विचार तथा तत्वमीमांसी विचारों का परित्याग कर दिया और शासन कला पर बल प्रदान किया। इसीलिए प्रिंस में लिखते हुए मैकियावेली ने कहा कि उसने एक ऐसे मार्ग की खोज की है जिस पर आज तक कोई नहीं चला है। मैकियावेली के द्वारा धर्म प्रधान विचारधारा को भी अस्वीकृत कर दिया गया और **मैकियावेली यूरोप का पहला विचारक है जिसने धर्म(चर्च) और राज्य के बीच अलगाव व्यक्त किया।** उसके अनुसार चर्च का राज्य में हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए क्योंकि राज्य का सरोकार पारलौकिक मुद्दों से नहीं है अपितु राज्य का सम्बंध राज्य की सुरक्षा और राज्य को शक्तिशाली बनाये रखने से है। उसके राज्य और चर्च के बीच अलगाव का यही विचार **पंथनिरपेक्षता** कहलाता है, जिससे यह प्रतीत होता है कि मैकियावेली आधुनिक युग का विचारक है। वह चर्च का विरोधी था क्योंकि उसका यह मानना था कि चर्च राज्य की एकता में बहुत बड़ी बाधा है। परन्तु उसने धर्म का कभी विरोध नहीं किया, बल्कि धर्म का राजनीतिक और सामाजिक उपयोग किया। उसके अनुसार मानव का मूल स्वभाव डरपोक है और धर्म तथा ईश्वर एक अज्ञात शक्ति का भय है। इसलिए धर्म का प्रयोग करके राज्य की एकता को बढ़ावा दिया जा सकता है। यह बिंदु उल्लेखनीय है कि मैकियावेली यह स्पष्ट मानता था कि राजा या राजकुमार को धर्मिक नहीं होना चाहिए लेकिन उसे धर्म का राजनीतिक प्रयोग सीखना चाहिए।

मैकियावेली का शक्ति राजनीति सम्बन्धी विचार -

1. मैकियावेली के अनुसार शक्ति अर्जन ही राजनीति का मूल उद्देश्य है।
2. मैकियावेली के विचारों में आधुनिक राजनीतिक विचारों का प्रारंभिक बीज पाया जाता है। उसने संप्रभुता, धर्मनिरपेक्षता, भाषा आधारित राज्य एवं गणतंत्र जैसे राजनीतिक विचारों की रूप रेखा प्रस्तुत की।
3. मैकियावेली ने अपनी रचना "द प्रिंस " में शासन कला का विचार देते हुए कहा कि, "एक शक्तिशाली राजा ही शक्तिशाली इटली का निर्माण कर सकता है।
4. मैकियावेली ने राजा को सलाह दी कि उसे यह सतर्कता रखनी चाहिए कि राजा के प्रति प्रजा में घृणा उत्पन्न न हो तथा राजा द्वारा प्रजा की महिलाओं व संपत्ति पर आक्रमण न किया जाए।
5. मैकियावेली ने **"The Art of War"** में राज्य की सुरक्षा के लिए नागरिक सेना का समर्थन किया है, किराये की सेना का समर्थन नहीं किया।
6. शक्ति को बढ़ाने हेतु बल प्रयोग अन्तिम विकल्प के रूप में करना चाहिए एवं हिंसा का प्रयोग बर्बरता तथा शीघ्रता से करना चाहिए।
7. राष्ट्रवाद की उत्पत्ति का आधार मैकियावेली के विचारों में मिलता है। मैकियावेली के लिए राष्ट्रवाद का अभिप्राय राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने से था। राष्ट्र को शक्तिशाली करने का आशय, इटली की शक्तियों को एक राजा में केंद्रित करना था, इसलिए उसने निरंकुश राजतन्त्र का समर्थन किया।
8. मैकियावेली के इन्हीं राजनीतिक विचारों के योगदान के लिए उन्हें आधुनिक राजनीति चिंतन का जनक कहा जाता है।
9. मैकियावेली ने माना कि आम व्यक्ति कायर और डरपोक होता है इसलिए शासक शक्ति के द्वारा उन पर नियंत्रण स्थापित कर सकता है। चार मानवीय प्रवृतियां मानवीय व्यवहार को नियंत्रित करती हैं-

- प्रेम
- भय
- अवमानना
- घृणा।

उसके अनुसार शासक को लोगों पर नियंत्रण रखने के लिए भय और प्रेम का मिला जुला प्रयोग करना होगा और उसके अनुसार भय द्वारा संचालित प्रेम स्थायी होता है।

- मैकियावेली की शक्ति राजनीति सत्ता प्राप्ति पर आधारित है, जिसमें नैतिकता, धर्म और पारंपरिक मूल्यों की अपेक्षा राजनीतिक परिणामों को अधिक महत्व दिया गया है। मैकियावेली के अनुसार राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है, जहां नैतिकता और आदर्शों की अपेक्षा यथार्थ, सत्ता और व्यावहारिकता का स्थान होता है। उन्होंने माना कि शासकों को अपने

लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए किसी भी साधन का उपयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उनके अनुसार, "साधनों की सफलता उनके परिणामों से जानी जाती है।" यह दृष्टिकोण उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिसे आज "मैकियावेलियनिज़्म" के रूप में जाना जाता है।

- निकोलो मैकियावेली की कृति **'द प्रिंस'** आधुनिक राजनीतिक **यथार्थवाद** का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें राज्य और राजनीति की वास्तविकता को आदर्शवादी दृष्टिकोणों के विपरीत प्रस्तुत किया गया है। मैकियावेली ने स्पष्ट किया कि राज्य को सशक्त और स्थिर बनाने के लिए शासक को परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करना चाहिए, भले ही उसके लिए नैतिक सिद्धांतों से समझौता करना पड़े। उनका यह दृष्टिकोण आधुनिक राज्य और राजनीति में **'मैकियावेलियन'** शब्द का आधार बना, जो सत्ता-प्राप्ति के लिए व्यावहारिकता और शक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण की वकालत करता है।
- मैकियावेली ने शासक के लिए कुछ प्रमुख गुणों का उल्लेख किया है जैसे शक्ति, चतुराई, और अवसरवाद। उनका मानना था कि एक शासक को लोमड़ी की तरह चालाक और शेर की तरह शक्तिशाली होना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि नैतिकता की अपेक्षाओं में उलझने की बजाय शासक को यथार्थ के अनुसार कार्य करना चाहिए, जिससे राज्य की स्थिरता बनी रहे। उनकी यह विचारधारा आधुनिक राज्य प्रणाली के विकास में सहायक सिद्ध हुई, जहाँ सरकारों ने राष्ट्रीय हित और व्यावहारिकता को प्रमुखता दी।
- आधुनिक राज्य व्यवस्था में, मैकियावेली के सिद्धांतों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। राजनेता और सरकारें आज भी अपनी नीतियों में शक्ति राजनीति को प्रमुखता देती हैं, विशेषकर अंतरराष्ट्रीय संबंधों में, जहाँ नैतिक आदर्शों से अधिक शक्ति-संतुलन और राष्ट्रीय हितों पर ध्यान दिया जाता है। मैकियावेली की पावर पॉलिटिक्स का प्रमुख आधार उनका यथार्थवाद है। उन्होंने राजनीति को वस्तुतः उसी रूप में देखा जैसा वह वास्तव में है, न कि जैसा उसे होना चाहिए। उनके विचारों का उद्देश्य एक आदर्श राज्य की स्थापना नहीं था, बल्कि सत्ता को बनाए रखने और बढ़ाने के व्यावहारिक उपायों को प्रस्तुत करना था।

निष्कर्ष -

मैकियावेली यथार्थवादी दृष्टिकोण के समर्थक थे, परन्तु उनके तरीकों और सांस्कृतिक संदर्भों में अंतर था। मैकियावेली की सोच व्यक्तिवादी और शक्ति-केंद्रित थी। वर्तमान में, इनके सिद्धांत कई रूपों में प्रासंगिक हैं। वर्तमान वैश्विक राजनीति में जहां शक्ति संतुलन, कूटनीति और रणनीतिक साझेदारी महत्वपूर्ण हैं, मैकियावेली के विचार हमें जटिल राजनीतिक परिस्थितियों को समझने और उनसे निपटने के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। इन विचारों का उपयोग न केवल राज्य के शासन संचालन में बल्कि व्यापार, प्रबंधन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी किया जा सकता है, जहां व्यावहारिकता और रणनीति की

आवश्यकता होती है। इस प्रकार मैकियावेली के राजनीतिक सिद्धांत आधुनिक समय में भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं और वे हमें एक यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

मैकियावेली दार्शनिक नहीं बल्कि एक **कूटनीतिज्ञ** था इसलिए उसने राजा के स्वभाव का वर्णन तत्कालीन राजाओं के व्यवहार के आधार पर किया। इसलिए उसने कहा कि राजा को शेर जैसा साहसी और लोमड़ी जैसा चालाक होना चाहिए। इटली में स्थित शक्तिशाली चर्च न इटली में एकता पैदा कर रहा था और न ही किसी अन्य को एकता पैदा करने दे रहा था। इसीलिए मैकियावेली ने चर्च का विरोध किया और चर्च तथा राज्य के बीच अलगाव करते हुए पंथनिरपेक्ष विचारों का प्रतिपादन किया तथा राजा को शक्तिशाली बनाने के लिए राजनीति और नैतिकता का भी विभाजन कर दिया, इसीलिए उसे डनिंग ने अपने युग का शिशु कहा है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि मैकियावेली का विचार केवल 15 वीं शताब्दी के यूरोप के लिए महत्वपूर्ण था बल्कि उसकी मान्यताएं आज भी प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. बेनर, एरिका (2017): बी लाइक द फॉक्स, डब्ल्यू0 डब्ल्यू0 नॉर्टन एंड कंपनी

2. हेवुड,एंड्रयू (2011): ग्लोबल पॉलिटिक्स, पेलग्रेव मैकमिलन पब्लिशर्स लिमिटेड, हैम्पशायर, यू0के0

3. मैकियावेली, निकोलो(2017): द प्रिंस एंड द आर्ट ऑफ वॉर, अंग्रेजी अनुवाद, मैकमिलन पॉपुलर क्लासिक्स, लंदन और नई दिल्ली

4. मैकियावेली, निकोलो(2015): द प्रिंस एंड द डिस्कोर्सेज, अंग्रेजी अनुवाद: लुइगी रिची, कार्लटन हाउस, न्यूयॉर्क

5. जौहरी, जे0 सी0(1995): पॉलिटिकल थॉट (एंशिएंट एंड मेडिवल), मेट्रोपोलिटन बुक कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

6. हॉब्स, थॉमस(1985): लेवायथान, संपादित सी.बी. मैकफर्सन द्वारा, पेंगुइन क्लासिक्स बुक्स लिमिटेड